

# श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि Bhajans Bhakti Songs

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।  
बल बुधि बिद्या देहु मोहि, हरहु कलेस विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।  
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।  
कुमति निवार सुमति के संगी ॥

कचन बरन बिराज सुबेसा ।  
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।  
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥

संकर सुवन केसरीनंदन ।  
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।  
राम काज करिबे को आतुरा ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।  
राम लषन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।  
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।  
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लखन जियाये ।  
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।  
तुम मम प्रिय भरतहि सैम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।  
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।  
नारद सारद सहित अहीसा ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।  
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।  
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना ।  
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥

जुग सहस्त्र जोजन यर भानू ।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीँ ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।  
तुम रच्छक काहू को डर ना ॥

आयन तेज सम्हारो आपै ।  
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।  
महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।  
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै ।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।  
तिन के काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।  
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा ।  
है परसिद्ध जात उजियारा ॥

साधु संत के तुम रखवारे ।  
असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।  
अस बर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै ।  
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥

अंत काल रघुबर पुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई ।  
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।  
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं ।  
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥

जो सत पार पाठ कर कोई ।  
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।  
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ।

Source: <https://www.bharattemples.com/shreeguru-charan-saroj-raj-nij/>



# Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZjyhhKzSUD-Lt9Tw>